मासिक

इसलाहे समाज

जून 2024 वर्ष 35 अंक 6

ज़ुल हिज्जा

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

- वार्षिक राशि 100 रुपये
- प्रति कापी 10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	नर्मी का फ़ायदा	2
2.	सब्र का अर्थ	4
3.	अल्लाह की रहमत से मायूस न हों	5
4.	तस्बीह	07
5.	तौबा और अनुसरण का फ़ायदा	11
6.	इस्लाम पूरे संसार के लिए रहमत	12
7.	शिक्षाएं एवं उपदेश	13
8.	पक्की कब्र की शरई हैसियत	16
9.	जानवरों का ख्याल रखने का हुक्म	17
10.	खाने से संबन्धित कुछ अहकाम	18
11.	सबको मआफ कर दिया	23
12.	शादी को आसान बनाएं	24
13.	शोक सन्देश	26
14.	अपील	27
15.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सम्पादकीय

सब्र का अर्थ

अल्लाह के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मोमिन का मामला भी अजीब है, उसे खुशी पहुंचती है तो अल्लाह का शुक्र अदा करता है और तकलीफ पहुंचती है तो सब्र करता है। दोनों ही हालतों में उसके लिये भलाई है। (सहीह मुस्लिम)

कुरआन में अल्लाह तआला ने सब्र के फायदे के बारे में फरमायाः

''ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ के साथ मदद चाहो, अल्लाह तआला सब्र करने वालों का साथ देता है'' (सूरे बक़रा-१५२)

इस्लाम ने अपने अनुयाइयों को जिस सब्र की शिक्षा दी है वह साधारण हालात के लिये भी है और असाधारण हालात के लिये भी। सब्र का अर्थ अत्यंत व्यापक है। दुनिया में हालात बदलते रहते हैं, दुख सुख इन्सान के जीवन का हिस्सा है, लेकिन कभी कभार ऐसा वक़्त भी आता है कि इन्सान यह फैसला नहीं कर पाता है कि उसे क्या करना चाहिए, और क्या नहीं करना चाहिए, ऐसे में ओलमा से मार्गदर्शन लेना ज़रूरी हो जाता है सब्र का मतलब यह भी नहीं है कि हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाया जाये। सब्र के साथ प्रयास, उपाय, कानून का सहारा और हिकमत भी अपनाना ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर कहीं पर कोई पाबन्दी लगा दी जाती है यहां पर सब्र के साथ पाबन्दी के नुक्सानात से बचने के लिये प्रयास करना है, प्रयास करने का मतलब यह है कि कानून का सहारा लेकर पाबन्दी से बचा जा सकता है, कुछ चीज़ें वक़्ती तौर पर गलत होती हैं लेकिन सब्र, बुद्धिमत्ता, उपाय और प्रयास के जरिये गलत को दुरूस्त किया जा सकता है, गलत को गलत साबित किया जा सकता है। सब्र हमें यह सीख देता है कि हमें किसी भड़काऊ बातों में नहीं आना है, किसी के बहकावे में नहीं आना है, सब्र, उपाय, शरीअत का पाबन्द रहते हुए कानून की सहायता लेनी है। जब इन्सान सब्र के माध्यम से अपने कठिन दौर को सरल बना देगा तो फिर अल्लाह के शुक्र का अवसर आ जाता है यह एक मुसलमान के लिये किसी नेमत से कम नहीं है। इसी लिये इस्लाम ने यह बात कही है कि मोमिन को जब खुशी पहुंचती है तो अल्लाह का शुक्र अदा करता है और जब तकलीफ पहुंचती है तो सब्र करता है और ऐसे बन्दे को सब्र पर भी पुण्य मिलता है, सब्र और हिकमत की वजह से बड़े बड़े षड़यंत्र फेल हो जाते हैं और अल्लाह तआला ऐसे लोगों के लिये राह और मामला आसान बना देता है। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें सब्र और नमाज़ से अल्लाह की मदद मांगने की क्षमता दे।

❑ ❑ ❑

अल्लाह की रहमत से मायूस न हों

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''तुम बेतहरीन उम्मत हो जो लोगों के लिये पैदा की गई है कि तुम नेक बातों का हुक्म करते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो'' (सूरे आल इमरान-११०) कुरआन की इस आयत में मुसलमानों को बेहतरीन उम्मत क़रार दिया गया है और इसका सबब भी बयान किया गया है जिस का मतलब यह है कि अगर यह उम्मत इन विशिष्ट खूबियों से सुसज्जित रहेगी तो भलाई वाली उम्मत रहेगी वर्ना इस विशिष्टता से वंचित क़रार दी जा सकती है और उसका खोया हुआ मकाम व स्थान दुबारा मिल सकता है जिसके बारे में कुरआन ने भविष्यवाणी की है।

उम्मते मुस्लिमा पूरी मानवता के लिये भलाई और शुभचिंतक बन कर आई थी लेकिन अफसोसनाक बात यह है कि आज हम स्वयं फराइज़ और वाजिबात से दूर होते चले जा रहे हैं। इबादत का एहतमाम नहीं है, इबादत की रूहानियत का अभाव होता जा रहा है, इबादत की जगह हमारी जिन्दगी और समाज में खुराफात ने जगह बना ली है। आज हमारी हालत यह है कि हम दूसरों से भलाई की असीमित उम्मीद रखते हैं लेकिन हम फराइज़ व वाजिबात से इतने गाफिल हो गये हैं कि हमारे ज़ेहन से यह बिन्दु लगभग निकल चुका है कि दूसरों की अपेक्षा हमारी ज़िम्मेदारियां ज़्यादा हैं लेकिन हम अपने दायित्व से बिल्कुल बे परवाह हैं। नेकियां हैं लेकिन ऐसा लगता है कि हमारी नेकियां और अच्छाईयां हमसे बेज़ार हैं। बेज़ारी की एक छोटी सी दलील यह है कि रमज़ान के गुज़रने के बाद हम पहले के मुक़ाबले में अपने परवर दिगार से बहुत दूर हो गए। इबादत की सूरते हाल यह है कि ईद के दिन भी दुनियावी मसरूफ़ियात में इतना डूब जाते हैं कि ईदुल फित्र के दिन नमाज़ के वक़्त भी ईदगाह में हाज़िर नहीं हो पाते हैं।

इन्सान के लिये आख़िरी चीज़ उम्मीद है और उम्मीद का खत्म हो जाना बेज़ारी की इंतिहा है। उम्मीद खत्म हो जाने के बाद मायूसी बचती है जब कि अल्लाह ने कुरआन में कई स्थानों पर अपने बन्दों को मायूसी से बचने का उपदेश दिय है।

''(मेरी जानिब) से कह दो कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है तुम अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो जाओ। निसन्देह अल्लाह तआला सारे गुनाहों को मआफ कर देता है, वाक़ई वह बड़ी बख्शिश बड़ी रहमत वाला है'' (सूरे नूर-५३)

कुरआन में अल्लाह ने फरमायाः

''अल्लाह की रहमत से निराश न हो'' (सूरे यूनुस-८७)

इन्सान की गलत फहमी यह है कि वह सोचता है कि उसने अपनी ज़िन्दगी में गुनाह पर गुनाह किये, अल्लाह की नाफरमानियां की हैं, बन्दों के अधिकार और अल्लाह

के अधिकार को अदा करने में गैर ज़िम्मेदारी का सुबूत दिया है तो अल्लाह उसे क्यों मआफ करेगा लेकिन इन्सान की यह सोच सरासर गलत है। अल्लाह की रहमत बहुत विस्तृत (वसीअ) है वह अपने बन्दों से बेपनाह मुहब्बत करता है शर्त यह है कि बन्दा अपने गुनाहों से तौबा करके अल्लाह से लौ लगाए लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि अल्लाह की रहमत और मग्फिरत की उम्मीद पर गुनाह करता जाए अल्लाह के अहकाम व फराइज़ की परवाह न करे और अल्लाह की सीमाओं, फराइज़ और वाजिबात पर अमल न करे और यह सोचे कि अल्लाह तो हमें मआफ कर देगा। यह उम्मीद सरासर धोका है और हम गलत फहमी का शिकार हैं। यह इतना बड़ा धोका और उम्मीद के इतनी विपरीत चीज़ है कि अगर क़ौम वास्तव में इस सोच व फिक्र में लिप्त हो जाए तो वह बेजा और बेफायदा उम्मीद की दलदल में धंसती चली जाएगी। इसी बेजा उम्मीद का ही परिणाम है कि पूरी मानवता और मिल्लत धोका खाती चली जा रही है। कामयाबी के रास्ते से दूर होती चली जा रही है वह दिशाहीन का शिकार है उसे अपना मार्गदर्शक कुरआन व हदीस को समझने के बजाए एक निराधार चीज़ से उम्मीद लगाए बैठा है। ऐसी सूरत में उम्मते मुस्लिमा से क्या उम्मीद की जा सकती है कि वह मार्गदशन का कर्तव्य निभाएगी।

मुलकी और विश्व स्तर पर हालात बड़ी तेज़ी से बदल रहे हैं। इन हालात को अपने हक़ में साज़गार बनाने के लिये ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने परवरदिगार को पहचानें, इबादतों का एहतमाम करें, तिलावत करें, मसनून दुआएं पढ़ें, तौबा व इस्तेग़फार करें और अपने असलाफ की जीवन शैली को अपनाने का प्रयास करें। अल्लाह से लौ लगाएं। नाउम्मीदी और मायूसी किसी भी मसले का हल नहीं है, मायूसी हमें नाकामी की तरफ ले जाती है, कठिनाइयों और मुश्किलों से घबराने के बजाए इसका समाधान ढूंढने की ज़रूरत है, दुनिया की कोई भी समस्या (मसला) ऐसा नहीं है जिसका समाान कुरआन व हदीस और हमारे असफलाफ ने पेश किया हो। शर्त यह है कि हम निःस्वार्थ, जज़्बा और ईमानदारी के साथ कुरआन व हदीस की तालीमात को अपनाएं। इस्लाम की सच्ची तालीमात को पूरी मानवता तक पहुंचाने का संकल्प करें और ऐसी फरेबी उम्मीद से बचें जो हमें महज़ धोका और अंधेरे में रखती है। खास तौर से दीन से दूर न हों, इन्सानियत के जौहर से खाली न हों, भलाई, स्रेष्टा और सृष्टि से दूर न हों, कर्म व कथन और आचरण से दूरी अल्लाह की रहमतों से बेज़ार और वंचित होने की अलामत और असल वजह है। इसलिये अल्लाह की रहमतें हर स्तर पर आर्थिक, राजनैतिक, दीनी, दुनियावी, इल्मी व तर्बियती और नैतिक हर एतबार से रूठती चली जा रही हैं। काश कि हम अल्लाह का होकर रहमतों का सज़ावार बन जाएं उसकी तरफ पलट कर उसके इंआम का उम्मीदवार बनकर और दीन अख़लाक बेज़ारी से छुटकारा हासिल करके कामयाब और सफल हो जाएं।

❑ ❑ ❑

तस्बीह

प्रो० डा० ज़ियाउर्रहमान आज़मी

'तस्बीह' एक इस्लामी परिभाषिक शब्द है, जिसका अनुवाद किसी और भाषा में करना कठिन है, क्योंकि किसी और धर्म में 'तस्बीह' का वह अर्थ पाया ही नहीं जाता जो कुरआन में आया है। इसलिए कि हर धर्म में किसी न किसी प्रकार से 'शिर्क' पाया जाता है और 'तस्बीह' शिर्क के विरुद्ध अल्लाह के एक होने का वर्णन है। इसलिए समझने के लिए इसका अर्थ है अल्लाह की पवित्रता और महिमा का हर प्रकार के शिर्क से रहित होकर वर्णन करना। चूंकि वही सारी सृष्टि का रचयिता है, इसलिए किसी न किसी प्रकार से सारी सृष्टि ही उसकी 'तस्बीह' कर रही है, उसका गुणगान अथवा महिमागान कर रही है।

फरिश्तों द्वारा अल्लाह की तस्बीह

जब तुम्हारे 'रब' ने फ़रिश्तों से कहा, ''मैं धरती में 'ख़लीफ़ा' बनाने वाला हूं''। उन्होंने कहा, ''क्या उसमें तू उसे नियुक्त करेगा जो उसमें बिगाड़ पैदा करेगा और रक्तपात करेगा? जबकि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरी 'तस्बीह' (गुणगान) करते हैं, और तेरी पवित्रता का वर्णन करते हैं।'' उसने कहा, ''मैं वह जानता हूं जो तुम नहीं जानते।'' (सूरा-२, अल-बकरा, आयत-३०)

''क़ियामत के दिन तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि वे 'अर्श' (अल्लाह के सिंहासन के) चारों ओर घेरा बांधे हुए हैं, अपने 'रब' की प्रशंसा के साथ 'तस्बीह' (गुणगान) कर रहे हैं।'' (सूरे-३९, अज--ज़ुमर, आयत-७५)

''तथा हम पंक्तिबद्ध खड़े हुए हैं।'' (सूरा-३७, अस-साफ़्फ़ात, आयतें-१६५,१६६)

बादलों द्वारा अल्लाह की तस्बीह

''गरजते बादल और भय खाए हुए फ़रिश्ते उसकी प्रशंसा के साथ 'तस्बीह' कर रहे हैं।'' (सूरा-१३, अर-रअ्द, आयत-१३)

पहाड़ों द्वारा अल्लाह की तस्बीह

''हमने पहाड़ों को उस (अर्थात् दाऊद अलैहिस्सलाम) के साथ लगा दिया था कि सन्ध्या समय, और प्रातः काल 'तस्बीह' करते रहें।'' (सूरो-३८, सॉद, आयत-१८)

पक्षियों द्वारा अल्लाह की तस्बीह

''क्या तुमने देखा नहीं कि जो कोई भी आकाशों और धरती में है, अल्लाह की 'तस्बीह' (गुणगान) कर रहा है और पंख फैलाए हुए पक्षी भी? हर एक अपनी बंदगी और 'तस्बीह' से परिचित है और अल्लाह जानता है जो कुछ वे करते हैं।'' (सूरा-२४, अन-नूर, आयत-४१)

अर्थात् सारी सृष्टि ही उसकी 'तस्बीह' कर रही है। परन्तु हम उनकी तस्बीह को समझते ही नहीं

''सातों आकाशों और धरती और जो कोई उनके बीच है सब उसकी 'तस्बीह' (महिमागान) करते हैं। और ऐसी कोई चीज़ नहीं जो

उसकी प्रशंसा के साथ 'तस्बीह' न करती हो। परन्तु तुम उनकी 'तस्बीह' को समझते नहीं हो। निस्सन्देह वह बड़ा ही सहनशील और क्षमा करने वाला है।'' (सूरा-१७, बनी-इसराईल, आयत-४४)

'तस्बीह' को कुरआन तथा सहीह हदीसों में हमारा वास्तविक उद्देश्य बताया गया है।

''उन घरों में, जिनको ऊंचा करने और जिनमें अपने नाम को याद करने का अल्लाह ने आदेश दिया है, ऐसे लोग प्रभातकाल तथा सायंकाल अल्लाह की तस्बीह करते हैं, जिन्हें अल्लाह की याद और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने से न तो व्यापार ग़ाफ़िल करता है न क्रय-विक्रय। वे उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आंखें विकल हो जाएंगी। (सूरा-२४, अन-नूर, आयतें-३६,३७)

घरों को उच्च करने का अर्थ है मस्जिदें बनाना, जहां इबादत के साथ अल्लाह की 'तस्बीह' की जाती है। यह तो उन सदाचारियों का वर्णन है जिनके दिल हर समय अल्लाह की याद में मग्न रहते हैं और उसकी 'तस्बीह' बयान करते हैं जो यह है-

'सुबहानल्लाह, सुबहानल्लाह अर्थात सारी पवित्रता और महिमा केवल अलाह के लिए है, कोई उसका साझी नहीं है। लेकिन जो लोग उसकी पवित्रता और महिमा को नहीं पहचान पाते और उसकी अनुभूति नहीं कर पाते, किसी न किसी जीवधारी को उसका साझी बना बैठते हैं। जैसे किसी ने किसी को उसका बेटा बना दिया।

जैसा कि कुरआन में है-

''यह उसकी महिमा के विरुद्ध है कि उसका कोई बेटा हो, जबकि आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है, और अल्लाह का कार्यसाधक होना काफ़ी है'' (सूरा-४, अन-निसा, आयत-१७१)

''कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है। महिमावान है वह! बल्कि वे तो उसके प्रतिष्ठित बन्दे हैं।'' (सूरा-२१, अल-अंबिया, आयत-२६)

अर्थात् जिनको ये लोग अल्लाह के बेटे समझ बैठे हैं वे तो उसके प्रतिष्ठित 'फ़रिश्ते' हैं, जो उसकी 'तस्बहीह' में लगे हुए हैं। इन पथ-भ्रष्टों ने इसी को पर्याप्त समझा बल्कि अल्लाह की बेटियां भी बना डालीं। क़ुरआन में है-

''वे अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं- महान और उच्च है वह और अपने लिए वह, जो वे चाहें।'' (सूरा-१६, अन-नहूल, आयत-५७)

अर्थात् अरब के मुशरिक स्वयं अपने लिए बेटियों को पसन्द नहीं करते थे, परन्तु उन्होंने अल्लाह की बेटियां बना रखी थीं, जिनकी पूजा करते थे। अल्लाह तो बड़ा ही महिमावान है और पवित्र है इस बात से कि वह अपने लिए बेटियां बनाकर रखे। जब ऐसी बात है तो अल्लाह की तस्बीह हर समय करनी चाहिए, उससे अचेत नहीं रहना चाहिए। इसलिए क़ुरआन में बार-बार इसकी चेतावनी आई है। (देखिएः सूरा-३, आले-इमरान, आयत-४१, सूरा-२०, ता-हा, आयत-१३०, सूरा-४०, अल-मोमिन, आयत-५५) इत्यादि। इसी लिए मुसलमान हर नमाज़ में रुकूअ की दशा में 'सुबहा-न रबियल-अज़ीम और सजदे की दशा में 'सुबहा-न रबियल-आला' पढ़ते हैं। अर्थात मैं महान रब की तस्बीह बयान करता हूं।

इस प्रकार तस्बीह के द्वारा अल्लाह ने शिर्क के सारे दरवाज़े बन्द कर दिए, क्योंकि तस्बीह भी इबादत है और यह तस्बीह भी केवल अल्लाह ही की जा सकती है। अल्लाह ने विभिन्न अवसरों पर अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी तस्बीह का आदेश दिया है। जैसा कि क़ुरआन में है-

''जब अल्लाह की सहायता आ जाए और विजय प्राप्त हो, और तुम देखो कि लोगों के दल के दल अल्लाह के धर्म में प्रवेश कर रहे हैं तो प्रशंसा के साथ अपने 'रब' की तस्बीह करो, और उससे क्षमा मांगो। निस्न्देह वह 'तौबा' स्वीकार करने वाला है।'' (सूरा-११०, अन-नस्र, आयतें, १-३)

यह सूरा मक्का-विजय के पश्चात् अवतरित हुई। यह वही 'मक्का' है जिससे कठोर हृदय लोगों ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसलिए निकाल दिया था कि आप उनको एक अल्लाह की इबादत की ओर बुलाते थे। और आज अल्लाह की सहायता से आप विजयी होकर अपने प्रिय नगर को वापस आए हैं और लोग दल के दल इस्लाम में प्रवेश कर रहे हैं। ऐसे अवसर पर आपको आदेश दिया जा रहा है कि अल्लहा की प्रशंसा के साथ उसकी 'तस्बीह' करें, जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को विजय प्रदान की, इस्लाम, विरोधि ायों को पराजय का मुंह दिखलाया। अतः आप केवल उस महान हस्ती की 'तस्बीह' करें। सहीह हदीसों में भी तस्बीह की बड़ी महत्वता बताई गई है। एक हदीस में आया है-

''जिसने प्रतिदिन सौ बार कहा, 'सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही' उसके सारे पाप मिट जाएंगे, चाहे वे समुद्र के झाग के बराबर ही क्यों न हों।'' (सहीह बुखारी, ६४०५ व सहीह मुस्लिम, २६९१) एक और हदीस में आता है-

''दो शब्द जो पढ़ने में बहुत सरल हैं, तराजू में भारी हैं और रहमान के निकट बहुत प्रिय हैं, वे 'सुबहानल्लाहिल अजीम' और 'सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही' हैं।'' (बुखारी, ४६०६ तथा मुस्लिम, २६९४)

इसलिए हर मुसलमान को चाहिए कि प्रातः काल तथा सायंकाल, और नमाज़ों के बाद अल्लाह की अधिक से अधिक 'तस्बीह' करे (अर्थात सुबहानल्लाह, सुबहानल्लाह कहे), ताकि अल्लाह उससे प्रसन्न हो, और 'तस्बीह' की बरकतें उसे इस जीवन में और इस जीवन के पश्चात भी प्राप्त होती रहें। यूनुस अगर अल्लाह की 'तस्बीह' न करते तो क़ियामत तक मछली के पेट में पड़े रहते। जैसा कि क़ुरआन में है-

''तो फिर उन्हें मछली ने निगल लिया, और वह दोषी था। तो यदि वह 'तस्बीह' करने वालों में से न होता तो लोगों के उठाए जाने तक मछली के पेट में होता'' (अर्थात् क़ियामत तक मछली के पेट में ही पड़े रहते। (सूरा-३७, अस-साफ़्फ़ात, आयतें १४२, १४४)

और उनकी 'तस्बीह' तथा दुआ का वर्णन भी क़ुरआन में आया है।

''मछली वाले को याद करो जबकि वह क्रोधित होकर चल पड़ा, और समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे। अन्ततः उसने अंधेरों में से पुकारा, ''इलाही, तेरे अतिरिक्त कोई ईष्ट-पूज्य नहीं, निस्सन्देह मैं ही अत्याचारियों में से हूं। तो हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, और उसको दुखों से मुक्त किया, और हम इसी प्रकार ईमानवालों को बचा लिया करते हैं'' (सूरा-२१,

अल-अंबिया, आयतें-८७, ८८)

इससे मालूम हुआ कि पहले के रसूल भी अल्लाह की तस्बीह किया करते थे। जैसे मूसा अलैहिस्सलाम (सूरा-७, अल-आराफ, आयत-१४३) ईसा अलैहिस्सलाम और (देखिए सूरा-५, अल-माइदा, आयत-११६)

और सबसे बढ़कर यह कि जन्नत में जाने वालों के मुख से 'सुबहानल्लाह' की आवाज़ निकलेगी (देखिए सूरा-१०, युनूस, आयत-१०) और सहीह हदीस में भी वर्णन आया है कि उनके दिल एक होंगे और प्रातः काल तथा सायंकाल वे अल्लाह की 'तस्बीह' बयान करेंगे। (देखिएः सहीह मुस्लिम, ३८३४) और एक दूसरी हदीस में आया है कि वे 'तस्बीह' बयान करेंगे। (देखिएः सहीह मुस्लिम ३८३४) और एक दूसरी हदीस में आया है कि वे 'तस्बीह' इस प्रकार करेंगे जैसे निरन्तर सांस का अन्दर और बाहर आना-जाना लगा रहता है। (देखिएः सहीह मुस्लिम, ३८३८)

इसलिए किसी मुसलमान को अल्लाह की 'तस्बीह' से ग़ाफिल (अचेत) नहीं रहना चाहिए।

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस के ज़ेरे एहतमाम

20वाँ आल इंडिया मुसाबक़ा हिफ्ज़ व तजवीद और तफसीर कुरआन करीम

दिनांक 3-4 अगस्त 2024

शनिवार-रविवार स्थानः डी-254, अहले हदीस कम्लेक्स ओखला, नई दिल्ली-25

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 28 जुलाई 2024

एक उम्मीदवार केवल एक ही श्रेणी में भाग ले सकता है फार्म मर्कज़ी जमीअत की वेब साइट www.ahlehadees.org से डाउन लोड किया जा सकता है।

अधिकृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें।

मुसाबका हिफ्ज व तजवीद व तफसीरे कुरआन कमेटी

011-23273407 Fax 011-23246613

Email. Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

तौबा और अनुसरण का फ़ायदा

अबू मुआविया सलफी

इन्सान से पाप होना मानव जीवन का हिस्सा है मगर पाप पर पछतावा होकर तौबा करना अच्छे इन्सान की खूबी है और अपने पाप पर डट जाना शैतानी काम है। यही वजह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तौबा करने वालों को सबसे बेहतरीन क़रार दिया है फरमायाः

''हर इन्सान से खता होती है और बेहतरीन खताकार वह लोग हैं जो (गुनाह हो जाने पर) तौबा करते हैं।'' (इब्ने माजा ४२५१)

तौबा करना जहाँ एक तरफ अच्छे और बेहतरीन इन्सान होने की पहचान है वहीं पर दूसरी तरफ तौबा करने से अल्लाह खुश होता है पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''अल्लाह तआला तौबा करने वालों को और पाक रहने वालों को पसन्द फरमाता है।'' (सूरे बक़राः२२२)

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

तुम में से किसी ने भूल-चूक से पाप कर लिया, और फिर तौबा करके अपना सुधार कर लिया तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है।

(सूरा-६, अल-अनआम, आयत-५४)

अल्लाह तआला ने एक दूसरी आयत में फरमायाः

''फिर आदम ने अपने रब से कुछ शब्द सीखकर क्षमा मांगी, तो अल्लाह ने उसकी तौबा स्वीकार कर ली। निस्सन्देह वह तौबा स्वीकार करने वाला दयावान है।'' (सूरा-२, अल-बक़रा, आयत-३७)

जिन आमाल की वजह से अल्लाह तआला अपने बन्दों से मुहब्बत करता है उनमें से एक सबब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण भी है। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण (पैरवी) ही से दुनिया और आख़िरत में कामयाबी मिलती है इसके बिना न तो कोई मुसलमान सही मानों में मुसलमान कहलाने का पात्र है और न ही नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण के बिना कोई अमल कुबूल हो सकता है। पवित्र कुरआन में कई स्थान पर इसका उल्लेख किया गया है कि रसूल की एताअत (अनुसरण) ही अल्लाह की एताअत है, रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एताअत ही एक मुसलमान की पहचान है। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एताअत से ही आखिरत में कामयाबी संभव है, रसूल की एताअत ही से अल्लाह तआला अपने बन्दों से मुहब्बत करता है। जैसा कि पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''कह दीजिये! अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, स्वयं अल्लाह तआला तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे पाप को मआफ कर देगा और अल्लाह तआला बड़ा बखशने वाला मेहरबान है।'' (सूरे आले इमरान-३१)

❑ ❑ ❑

इस्लाम पूरे संसार के लिए रहमत है

मौलाना शमसुल हक़ सलफी

इस्लाम पूरी दुनिया को अम्न व शान्ति का सन्देश देता है, वह पूरी मानवता से हमदर्दी का झण्डावाहक है, जिस ने यह धर्म दुनिया वालों को दिया है वह दुनिया में सब से ज़्यादा दयालू और कृपालु है और जिसके माध्यम से यह दीन हम इन्सानों तक पहुंचा है वह पूरे संसार वालों के लिये दया आगार हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दया करने वालों पर ही अल्लाह दया करता है तुम धरती वालों पर दया करो आस्मान वाला तुम कर दया करेगा। (जामे तिर्मिज़ी १६२४)

इस्लाम धर्म पूरे संसार के लिये रहमत है यह जानवरों पर भी दया करने की शिक्षा देता है। इस्लाम वह धर्म है जिसमें यह बताया गया है कि एक प्यासे कुत्ते को पानी पिला कर स्वर्ग हासिल किया जा सकता है और एक बिल्ली को दुख पहुंचाने से नरक में चला जाता है। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक शख़्स कहीं जा रहा था कि उसे सख्त प्यास लगी वह एक कुवें में उतरा और पानी पी कर बाहर आ गया तो उसने देखा कि एक कुत्ता हाँप रहा है और प्यास की वजह से कीचड़ चाट रहा है उसने अपने मन में कहा कि मुझे भी उस वक़्त ऐसी ही प्यास लगी हुई थी। फिर वह कुवें में उतर कर अपने चमड़े के मोजे में पानी भर कर इस प्यासे कुत्ते को पानी पिला दिया। अल्लाह ने इस शख़्स के इस नेक काम को कुबूल कर लिया और इस शख़्स की मग़िफरत (छमायाचना) कर दिया। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यारे साथियों ने पूछा ऐ अल्लाह के पैगम्बर क्या हमें चौपाये पर भी पुण्य मिलेगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहाः हर जानदार पर दया करने में पुण्य है। (सहीह बुखारी)

इस हदीस से मालूम हुआ कि इस्लाम के पैगम्बर केवल इन्सानों ही नहीं बल्कि पूरे संसार की सृष्टि के लिये रहमत हैं यही वजह है कि अल्लाह ने आप को संबोधित करते हुए फरमायाः इस्लाम मानव सम्मान और आम इन्सानों पर दया करूणा की शिक्षा देता है। इस्लाम दुख पर सब्र और हौसले के साथ जीने का उपदेश देता है। कानून और शरीअत के दायरे में रहते हुए इन्तेक़ाम (प्रतिशोध) तो उस वक़्त लेने का हुक्म देता है जब पानी सर से गुजर जाये मगर इन्तेकाम लेने में भी यह शर्त लगाता है कि इन्तेकाम बराबरी पर हो। जैसा कि पवित्रत कुरआन ने भी यह आदेश दिया है कि ''जितना अत्याचार किया गया बस उतना ही इन्तेक़ाम लो'' कुरआन में दूसरी जगह फरमाया ''बुराई की सज़ा उतनी ही बुराई है और जो मआफ कर दे और सुधार कर ले तो उसका बदला अल्लाह के जिम्मे है'' (सूरे शूराः४०)

इन दलीलों से मालूम हुआ कि इस्लाम पूरी मानवता के लिये दयालु और कृपालू है यही इस धर्म का सौन्दर्य है जिस की हिफाज़त करना हर मुसलमान का कर्तव्य है।

❑❑❑

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं एवं उपदेश

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हदया कुबूल करते थे और इस पर दुआ भी देते थे। (बुखारी २५८५)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि जब आंध ी चलती तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते ''अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका खैरहा व खैरा मा फीहा व खैरा मा उर सिलत बिही व अ जू बिका मिन शर रिहा व शर्रे-मा फीहा व शर्रे-मा उर सिलत बिहि'' (मुस्लिम८९६)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रिश्ता नाता अर्श से लटका हुआ है वह कहता है जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसको जोड़ेगा और जो मुझे तोड़ेगा उसको अल्लाह भी तोड़ेगा। (बुखारी ५९८९ मुस्लिम २५५५)

नवास बिन समआन रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नेकी अच्छी आदत है और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और लोगों को इस गुनाह की खबर होना तुम्हें नापसन्द हो। (मुस्लिम २५५३)

नवास बिन समआन रजिअल्लल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरे बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

मअ्क़िल बिन यसार रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है। (मुस्लिम २९४८)

अबू बकरा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुकाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी ७०८३ मुस्लिम २८८८)

अबू सईद खुदरी रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे असहाब को गाली मत दो अगर कोई शख्स उहद पहाड़ के बराबर सोना भी खर्च कर डाले तो उनके एक मद गल्ला के बराबर भी नहीं पहुंच सकता और न उनके आधे मद के बराबर। (मुस्लिम ३६३७ मुस्लिम २५४१)

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरा हौज़ एक महीने की दूरी के बराबर होगा उसका पानी दूध से भी ज़्यादा सफेद होगा

और उसकी खुश्बू मुश्क से भी ज्यादा अच्छी होगी और उसका प्याला (कूज़ा) आस्मान के सितारों की तरह होगा जो एक बार उससे पी ले गा कभी प्यासा नहीं होगा (बुखारी २२६२ मुस्लिम ६५७६)

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने किसी जिम्मी को नाहक् कत्ल किया वह जन्नत की खुश्बू भी नहीं पा सकेगा हालां कि जन्नत की खुश्बू चालीस साल की दूरी से सूंघी जा सकती है। (बुखारी ३१६६)

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स कामयाब हो गया जो इस्लाम लाया और उसको प्रयाप्त रोज़ी दे दी गयी और उसको अल्लाह ने जितना दिया उस पर कनाअत (संतोष) किया। (मुस्लिम १०५४)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई जुमा के दिन आये और इमाम खुतबा दे रहा हो तो वह दो रकअत नमाज़ पढ़े। (बुखारी ११७० मुस्लिम ८७५)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारी तरह नमाज़ पढ़ी और हमारी ही तरह किबला की तरफ मुंह किया और हमारे जबीहा को खाया तो वह मुसलमान है जिसके लिये अल्लाह और उसके रसूल की पनाह है तो तुम अल्लाह और उसके रसूल की दी हुयी पनाह से ख्यानत न करो। (बुखारी ३९१)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम ऐसा अमल करते हो जो तुम्हारी नज़र में बाल से ज्यादा बारीक है तुम उसे मामूली समझते हो (बड़ा गुनाह नहीं समझते) और हम लोग नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम के जमाने में इन कामों को हलाक कर देने वाला समझते थे। (बुखारी ६४९२)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक काफिर जब दुनिया में कोई नेक काम करता है तो नेकी के बदले में उसको खाना खिलाया जाता है और जब मोमिन दुनिया में कोई नेक काम करता है तो अल्लाह तआला उसकी नेकियों को आखिरत के लिये जमा कर लेता है और उसकी फरमाबरदारी की वजह से तुरन्त उसको दुनिया में रोजी मिलती है (मुस्लिम २८०८)

इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स अपने अमीर में कोई बात नापसन्द करे तो सब्र करे अगर कोई उसकी एताअत से बालिश्त बराबर भी बाहर निकला तो उसकी मौत जाहिलियत की मौत होगी। (बुखारी १८४९ मुस्लिम ७०५३)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः गैब की पांच कुंजियां हैं जिन्हें केवल अल्लाह ही जानता है मां के पेट में क्या है केवल अल्लाह

जानता है, आने वाले कल में क्या होगा केवल अल्लाह ही जानता है बारिश कब होगी केवल अल्लाह जानता है किसी की मौत किस जगह होगी अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है और क्यामत कब काइम होगी सिर्फ अल्लाह जानता है। (बुखारी ७३७६)

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे कन्धे को पकड़ा और फरमायाः तुम इस दुनिया में अजनबी या मुसाफिर की तरह रहो। (बुखारी ६४१६)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जितना मैं जानता हूं अगर लोगों को भी अकेले सफर की बुराइयों के बारे में इल्म होता तो कोई सवार रात में अकेला सफर नहीं करता। (बुखारी २९९८)

अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि कुछ बच्चों के पास से उनका गुज़र हुआ तो उन्होंने उन बच्चों को सलाम किया और फरमाया नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम भी ऐसे सलाम करते थे (बुखारी २१६८ मुस्लिम ६२४७)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम अधिकतर यह दुआ पढ़ते थे "ऐ अल्लाह हमें दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भलाई दे और जहन्नम की आग से बचा" (बुखारी ६३८९ मुस्लिम ६९०)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सफर करते थे तो रोज़ा रखने वाला रोज़ा न रखने वाले को बुरा नहीं समझता था और रोज़ा न रखने वाला रोजेदार को बुरा नहीं समझता था। (बुखारी १११८, मुस्लिम १९४७)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सोने के लिये अपने बिस्तर पर जाते तो अपने दोनों हथेलियों पर कुल हुवल्लाहो अहद और सूरे मऊज़तैन पढ़कर दम करते फिर दोनों हाथों को अपने चेहरे पर और जिस्म के जिस हिस्से तक हाथ पहुंच जाता उस पर फेरते आप इस तरह तीन बार करते थे। (बुखारी ५७४८ मुस्लिम ५०१८)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला उन औरतों पर रहम करे जिन्होंने पहले हिजरत की थी जब अल्लाह ने यह आयत "और अपने दुपटटे अपने सीनों पर डाले रहा करें" नाज़िल की तो अंसार औरतों ने अपने तहबन्दों को दोनों किनारों से फाड़ कर उन की ओढ़नियां बना लीं। (बुखारी ४७५९)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब बारिश होती तो यह दुआ करते "ऐ अल्लाह नफा पहुंचाने वाली बारिश बरसा"। (बुखारी १०३२)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि मेरे दो पड़ोसी हैं मैं उन दोनों में से किस को हदया दूं आपने फरमायाः उन दोनों में से जिसका दरवाज़ा तुम्हारे दरवाज़े से करीब हो। (बुखारी २२५९)

पक्की कब्र की शरई हैसियत

मुहम्मद हाशिम तैमी

कबरों को पक्का बनाने के बारे में जब हम शरीअत की दलीलों पर शोधीय निगाह डालते हैं तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में कबरों को पक्का बनाना या उन पर किसी तरह का कोई निमार्ण करना जायज़ और दुरूस्त नहीं है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में और सहाबा किराम इसी दृष्टिकोण पर अमल करते थे अर्थात कबरों को पकका नहीं बनाते थे, कब्र जमीन से सिर्फ एक बालिश्त ऊंची रहती थी और इस पर कोई निमार्ण और चूनागच नहीं किया जाता था, पक्की कब्र बनाने से बचा जाता था। चारों इमामों और अन्य इमामों का भी इसी पर फ़तवा है सब इमाम एकमत हैं कि पक्की कब्र बनाना किसी भी सूरत में जायज नहीं है। बाद के बाज ओलमा ने कबरों को पक्का बनाने और इन पर मज़ारात के निर्माण के लिये जो दलील दी है वह अनर्थ और ठोस दलीलों की रोशनी में सही और दुरूस्त नहीं है।

जाबिर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कब्र पर चूनागच करने, इस पर बैठने और इस पर बिलडिंग बनाने से मना किया है (सहीह मुस्लिम ६७०) सुनन अबू दाऊद ३२२५, सुनन तिर्मिज़ी १०५२)

प्रसिद्ध धर्मशास्त्री अल्लामा इब्ने आबिदीन इस बारे में इमाम अबू हनीफ़ा रह० के हवाले से लिखते हैं कि कब्र पर किसी तरह का कोई निमार्ण करना, घर बनाना या इस पर कुब्बा आदि बनाना अप्रिय है। (अद दुर्रुल मुख्तार हाशिया इब्ने आबिदीन रद्दुल मुख्तार २/२३७)

इमाम मुहम्मद रह० की किताब किताबुल आसार पृष्ठ ६८ में लिखा है कि कब्र को चूनागच करना, उसको लीपना या उसके पास मस्जिद या निशान बनाना या इस पर मकान बनाना पक्का या कच्चा निषिद्ध है। यह कथन इमाम अबू हनीफ़ा रह० का है। अल मौसूउल फकीह ११/३४२ में इसी बात पर फुक़ाहाए किराम का इत्तेफाक़ नक़ल किया गया है। इसी लिये इमाम इब्ने तैमिया रह० ने भी इस पर तमाम इमामों का इत्तेफाक़ नक़ल किया है।

अल्लामा इब्ने उसैमीन रह० लिखते हैं:

कब्रस्तान मुर्दों का एलाक़ा है, वहां जीवित लोग नहीं रहते इसलिये वहाँ पर सजावट का एहतमाम न किया जाये, और सीमेन्ट पर मरसिया न लिखा जाये। कब्रस्तान को उसी हालत में रखा जाये ताकि कब्रस्तान के पास से गुज़रने वाले इससे नसीहत हासिल करें।

हदीस की दलीलों और इमामों के कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम धर्म में पक्की कब्र बनाने की कोई शरई हैसियत नहीं है बल्कि पक्की कब्र बनाना बिदअत है इस्लाम में इसकी कोई गुंजाइश नहीं है।

अफसोस है कि कुछ लोग क़ब्र को पक्का बनाने को दीन और नेक काम समझ कर अंजाम देते हैं। अल्लाह तआला हमें दीन की सही समझ अता फरमाये और कुरआन व हदीस के अनुसरण की क्षमता दे।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जानवरों का ख्याल रखने का हुक्म

मौलाना अब्दुर्रऊफ रहमानी

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ज़मीन पर रहने और बसने वाले अल्लाह की सृष्टि पर तुम दया करो आसमान वाला (अल्लाह) भी तुम पर अपनी दया बरसाये गा।

इस हदीस में ज़मीन पर बसने वाले अल्लाह की पूरी सृष्टि पर दया करने का उपदेश और निर्देश दिया गया है। इसलिये इंसानों के साथ जानवर भी हमारे दया के पात्र हैं। एक मौक़े पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि एक शख्स प्यासा होकर एक कुवें पर पहुंचा, वहां रस्सी डोल वगैरह कोई सामान नहीं था, मजबूरन कुवें में उतर कर उसने पानी पिया। जब कुवें से ऊपर आया तो देखा कि एक प्यासा कुत्ता सख्त प्यास की वजह से कीचड़ चाट रहा है वह कुत्ते पर दया खा कर दोबारा कुवें में उतरा और अपने मोजों में पानी भरा और मेहनत व मशक्कत से पानी निकाल कर ऊपर लाया और इस प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया। अल्लाह तआला को इस आदमी का यह नेक काम पसन्द आ गया और उसकी मग्फिरत कर दी। इस घटना को सुनने के बाद पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यारे सहाबा (साथियों) ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल क्या जानवरों से भी अच्छा व्यवहार करने पर पुण्य मिलता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हर जिन्दा और तर जिगर रखने वाले जानवर के साथ दया करने पर पुण्य मिलता है। (सहीह बुखारी) हज़रत सहल बिन हंजला बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक ऊंट के पास से गुज़र हुआ। जिस की पीठ भूख की वजह से मिल गयी थी इस ऊंट को देख कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः इन बेजुबान जानवरों, चौपायों के बारे में अल्लाह से डरो, भूखे प्यासे जानवर को इस्तेमाल न करो, उचित ढंग से उन पर सवारी करो, उचित ढंग से उन को छोड़ दिया करो और उनके थकने से पहले सवारी खातम कर दो। (मिश्कात, बाबुन्नफक़ात) अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ियल्लाहो अन्हो का बयान है कि एक बार अल्लाह के रसूल पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक अन्सारी के बाग में दाख़िल हुए, वहां एक ऊंट बँधा हुआ था जब उसने अल्लाह के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा तो आवाज़ निकाली और उस ऊंट की आखों से आंसू बहने लगे आप ने उस ऊंट के पास जाकर प्यार व दुलार से हाथ फेरा फिर आप ने पूछा कि इस ऊंट का मालिक कौन है? एक अंसारी नौजवान ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! यह मेरा ऊंट है। आपने फरमायाः इस बेजुबान जानवर के बारे में तुम अल्लाह से डरते नहीं जिसने तुम को इस जानवर का मालिक बनाया है। उसने मुझ से शिकायत की है कि तुम इसको भूखा रखते हो और काम ज़्यादा लेकर इसको दुख पहुंचाते हो। (अबू दाऊद) इन हदीसों से मालूम हुआ कि जिसके पास जानवर हो उसकी जिम्मेदारी है कि उसको खिलाने पिलाने में कदापि गफलत न करे और ताक़त से ज़्यादा उस पर बोझ न डाले।

खाने से संबन्धित कुछ महत्वपूर्ण अहकाम

सईदुर्रहमान सनाबिली

एक भ्रम और गलतफ़हमी का निवारण :

यहाँ अवाम के बीच फैली एक और गलतफहमी (भ्रम) का निवारण उचित होगा कि बहुत सारे लोग कहते हैं कि खाने की शुरूआत में बिस्मिल्लाह भूल जाने की सूरत में खाने के दौरान ''बिस्मिल्लाही फी अव्वहिली व आख़िरिही'' पढ़ लिया जाए तो उस वक़्त शैतान उल्टी कर देता है?

हालांकि यह गलत सोच है। पहली बात यह है कि यह बात जिस हदीस में है वह हदीस साबित और सही नहीं है इसलिए इससे दलील पकड़ना दुरूस्त नहीं है कि वह उल्टी करता है या फिर खाना खाता है। उमैया बिन मख्शी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक जगह मौजूद थे और वहाँ एक शख्स खाना खा रहा था या उसने खाने की शुरूआत में बिस्मिल्लाह नहीं कहा। जब इसके खाने का आखिरी लुक़्मा बचा और इसने इसे अपने मुंह तक उठाया तो इसने ''बिस्मिल्लाही फी औवलिही व आख़िरिही'' पढ़ा। यह देख कर नबी हंस पड़े और फरमायाः शैतान उस आदमी के साथ खाता रहा और जब उसने अल्लाह का नाम लिया तो शैतान ने अपने पेट के अंदर से सब कुछ उल्टी कर दी। (सुनन अबू दाऊद : ३७६७, अमलुल योमि वल्लैलती, लेखकः इमाम नेसाई २८२, शैख अल्बानी ने इसे ज़ईफ़ क़रार दिया है)

दूसरी बात यह है कि शैतान आपका खुल्लम-खुल्लाह दुश्मन है और वह आपके खाने में शामिल होकर ऊर्जा हासिल करता है और फिर आपको परेशान करता है, आपको बुराइयों पर आमादा करता है और आपको अश्लील कामों पर उभारता है।

लेकिन जब आप ''बिस्मिल्लाही फी अव्वलिही व आख़िरिही'' पढ़ लेंगे तो थोड़ा बहुत जो खाना खा लिया है उससे भी वह फायदा नहीं उठा पाएगा उसे उल्टी करनी पड़ेगी तो आप अपने शाश्वत दुश्मन के लिए ऐसा करेंगे इसलिए कि शरीअत में यह हुक्म मौजूद है। अगर कोई बुरी चीज़ होती तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हरगिज़ ऐसा हुक्म नहीं देते। और अल्लाह ज़्यादा जानता है।

इस्लाम ने सफाई सुथराई को आधा ईमान क़रार दिया है और अपने अनुयायियों को सफाई सुथराई का विशेष ध्यान देने की ताकीद की है। इस्लाम धर्म ने सफाई सुथराई का कितना ध्यान दिया है इसका अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नींद से उठने पर अपने दोनों हाथों को धुलने की ताकीद की है। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''जब तुम में से कोई नींद से

उठे तो अपना हाथ बर्तन में ना डाले यहां तक कि अपने हाथ को तीन बार ना धो ले क्योंकि उसे नहीं मालूम कि उसके हाथ ने कहां रात गुज़ारी है।" (सहीह बुख़ारी १६२, सहीह मुस्लिम २७८)

इंसान जब नींद से उठता है तो उस वक़्त अपने रोज़ाना के काम काज की शुरूआत करता है और साधारण रूप से शौचालय जाता है और वहां बर्तन इस्तेमाल करता है तो उसे ताकीद की है कि अपने हाथों को बर्तन में डालने से पहले तीन बार धो ले ताकि अगर उसके हाथ में किसी तरह की गंदगी लगी हो तो इससे बर्तन गंदा ना हो जाए।

इसी तरह उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब नापाकी की हालत में सोने जाते तो वुज़ू किया करते थे और अगर खाना खाना चाहते तो अपने दोनों हाथों को धुला करते थे। (सुनन नेसाई:२५७, शैख अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है।

इस हदीस में खाने से पहले मुतलक़न हाथ धोने का उल्लेख नहीं है बल्कि नापाकी की हालत में जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खाने का इरादा करते तो अपने हाथों को धुलने का इरादा करते फिर अपने हाथों को धुलने के बाद खाना खाते थे लेकिन उपर्युक्त दोनों हदीसों से यह बात साबित होती है कि इंसान को खाने से पहले अपने हाथों को धुलना चाहिए क्योंकि जब इंसान काम करता है तो उसके हाथ में विभिन्न प्रकार के कीटाणु लग जाते हैं और इसी तरह खाने की वजह से कीटाणु पेट में चले जाते हैं जिसकी वजह से इंसान के बीमार पड़ जाने की शंका होती है।

क्या खाने से पहले वुज़ू करना सुन्नत है?

कुछ रिवायतों में खाने से पहले वुज़ू करने को प्रिय कर्म बताया गया है और कहा गया है कि इस कर्म से घर में बरकत होती है, मोहताजी खत्म होती है, बीमारी दूर होती है, रोज़गार में बढ़ोतरी और शैतान से हिफाज़त होती है लेकिन जब हम इन हदीसों के बारे में जानने की कोशिश करते हैं तो मालूम होता है कि वह सभी हदीसें कमज़ोर और अस्वीकार्य हैं। इनमें से कुछ हदीसें निम्नलिखित हैं:

१. सलमान फारसी रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि मैंने तौरात में पढ़ा कि खाने के बाद वुज़ू करने से बरकत होती है इसका उल्लेख अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

"खाने से पहले और उसके बाद वुज़ू करने से बरकत होती है।" (सुनन अबू दाऊद ३७६१, सुनन तिर्मिजी १८४६, मुसनद अहमद २३३२, इसकी सनद में कैस बिन रबी अबू मुहम्मद कूफी हैं जो खुद सदूक़ हैं लेकिन उनका एक बेटा था जो उनकी हदीसों में रद्दो बदल (संशोधन) कर दिया करता था जिसकी वजह से उनको इख़्तेलात हो जाता था। इस वजह से ओलमा-ए- किराम ने उनकी हदीस को जईफ क़रार दिया है, कुछ लोगों ने तो आपके झूठ बोलने का भी आरोप लगाया है जबकि आप झूठे नहीं थे। अत्तारीखुल अवसत:२/१७२ इस हदीस को शैख अल्बानी रहिमहुल्लाह ने ज़ईफ क़रार दिया है।

२. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

''जो चाहता हो कि अल्लाह उसके घर के खैर व बरकत में इज़ाफ़ा फरमाए तो जब खाना लगाया जाए और जब उठाया जाए, उसे चाहिए कि वह वुजू करे।'' (सुनन इब्ने माजाः३२८०, शोबुल ईमान, लेखकः बैहक़ीः ५८०७, इसकी सनद में जुबारा बिन मुग़ल्लस ने कसीर बिन सलीम से रिवायत किया है और यह देनों के दोनों जईफ हैं)

३. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः खाने से पहले वुजू करना मोहताजी को मिटाता है और खाने के बाद हाथ ध ोना बीमारी जुनून (पागलपन) को खत्म करता है। (मुसनद अल शिहाब, लेखकः कुजाई १/२०५, हदीस को इमाम इराक़ी और इमाम कुज़ाई ने ज़ईफ करार दिया है)

इस हदीस के अलावा भी इस अर्थ की दूसरी रिवायतें भी बयान की जाती हैं जिसे कुछ लोगों ने खाने से पहले वुजू की वैधता को साबित करने की कोशिश की है जो बिल्कुल दुरुस्त नहीं है क्योंकि यह हदीसें साबित नहीं हैं। इसके विपरीत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा से सही सनद से साबित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शौचालय से वापस आए और आपकी सेवा में खाना प्रस्तुत किया गया। आपसे कहा गया कि क्या हम वुजू का पानी लाएं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे नमाज़ के लिए ही वुजू का हुक्म दिया गया है। (सुनन तिर्मिज़ी १७७०, शैख अल्बानी ने सहीह क़रार दिया है)

गर्म खाने को ठंडा करके खाना सुन्नत हैः

खाने के संबंध में एक सुन्नत यह है कि गर्म खाने से परहेज़ किया जाए और खाने को गरमा गरम ना खाया जाए क्योंकि अगर हम गरमा गरम खाते हैं तो यह खाने के बारे में हमारी ख्वाहिश और चाहत की दलील होती है और इसी तरह यह सुननत के खिलाफ भी है। असमा बिन्ते अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि जब मैं सरीद बनाती थी तो इसे कुछ देर ढांप देती थी ताकि इसकी गर्मी की शिद्दत और ध ुआं जाता रहे। फिर वह कहती थीं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुनाः यह बरकत के लिए महान चीज़ है। (मुसनद अहमद ४४/५२१, सुनन दारमी २/१३०१, सहीह इब्ने हिब्बान अल एहसान ५२०७, शैख अल्बानी रहिमाहुल्लाह ने सहीह २/२६२ में इसे सहीह क़रार दिया है।

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो ने कहा कि जब तक खाना की गर्मी की शिद्दत और धुंवा ना खत्म हो जाए इसे ना खाया जाए। (इसे बैहक़ी ने रिवायत किया है और शैख़ अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इरवाउल ग़लील ३६२ में सहीह क़रार दिया है।

इन दोनों हदीसों से मालूम होता है कि अगर खाना गर्म हो तो ठंडा हो जाने तक इंतज़ार करना चाहिए और गरमा गरम खाना खाने से परहेज़ करना चाहिए क्योंकि यह हदीस के विपरीत है, लेकिन इससे संबंधित जो हदीसें बयान की जाती हैं कि गरम खाने को ठंडा करो

क्योंकि गरम खाने में बरकत नहीं होती या इसी तरह से एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में गरमा गरम खाना लाया गया तो आपने अपना हाथ हटा लिया और कहा कि ऐ अल्लाह! हमें आग न खिला। एक दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह ने हमें आग नहीं खिलाया है।

यह और इस जैसी रिवायतें साबित नहीं हैं। (विवरण के लिए देखिएः सहीह १/७४८,८४६, इरवाउल ग़लील ७/३६)

दाहिने हाथ से खाना खाना और पानी पीना

खाना खाते और पानी पीते वक़्त हमें दाहने हाथ का इस्तेमाल करना चाहिए। इस्लाम धर्म ने खाने-पीने में बाएं हाथ के इस्तेमाल को शैतान का काम बताया है। इसलिए हमें बाएं हाथ से खाने और पीने से परहेज़ करना चाहिए। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

अर्थातः ''तुम में से जब कोई खाए तो दाएं हाथ से खाये और पानी पिए तो दाएं हाथ से पानी पिए क्योंकि शैतान बाएं हाथ से खाता और पीता है''। (सहीह मुस्लिमः२०२०)

उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दायाँ हाथ वुजू और खाने के लिए और बायाँ हाथ शौचालय और उन चीजों के लिए होता था जिन में गंदगी होती थी। (सुनन अबू दाऊदः३३, शैख अल्बानी रहिमाहुल्लाह ने इस हदीस को जईफ़ करार दिया है)

इसी तरह से सलमा बिन अकवअ रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि एक शख्स ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बाएं हाथ से खाना खाया। आपने उससे कहाः अपने दाएं हाथ से खाओ''। उसने जवाब दियाः मैं ऐसा नहीं कर सकता, आपने फरमायाः अल्लाह करे तुम ऐसा कभी ना कर सको। घमंड की वजह से उसने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात नहीं मानी। यही वजह है कि वह भविष्य में भी कभी अपना दायां हाथ अपने मुंह तक नहीं उठा सका। (सहीह मुस्लिम २०२१)

इन हदीसों से यह बात साफ हो जाती है कि खाने और पीने में हमें सिर्फ अपने दाएं हाथ का इस्तेमाल करना चाहिए और बाएं हाथ के इस्तेमाल से बचना चाहिए क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे शैतान का कर्म करार दिया है और आधुनिक चिकित्सा ने भी दाएं हाथ से खाने के आदेश में छिपे राज़ को उजागर किया है। आधुनिक विज्ञान के शोध में है कि सीधे हाथ से ना दिखाई देने वाली किरणें निकलती हैं और किरणें तो उल्टे हाथ से भी निकलती हैं लेकिन सीधे हाथ की किरणें लाभकारी होती हैं और उल्टे हाथ की किरणें हानिकारक होती हैं अर्थात सीधे हाथ से खाने में आरोग्य (शिफ़ा) है और उल्टे हाथ से खाने में बीमारियां पैदा होती हैं। इसलिए सीधे हाथ से खाना खाना शिफा को

अपने अंदर डालता है। (उर्दू डाइजेस्ट)

आज हम अपने समाज पर नजर डालते हैं तो पाते हैं कि इस सिलसिले में भी हम लोग कोताही के शिकार हैं। हम खाने-पीने में बाएं हाथ के इस्तेमाल करने के इतने आदी हो चुके हैं कि हमें एहसास तक नहीं होता कि हम कुछ गलत कर रहे हैं। इसी तरह हम में से कुछ लोग खाना खाने के वक्त बाएं हाथ से पानी का गिलास उठाकर पानी पीते हैं कि कहीं गिलास जूठे से गंदा ना हो जाए और कुछ लोग बाएं हाथ से ही गिलास पकड़े हुए होते हैं लेकिन नीचे से दायां हाथ लगा देते हैं और सोचते हैं कि हम शरीअत के खिलाफ काम करने से बच गए जबकि हकीकत यह है कि यह सभी तरीक़ा इस्लाम के विरुद्ध है। हमें खाने-पीने में दाहिने हाथ का इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि बर्तन या गिलास में जूठा लगना कोई ऐब की बात नहीं है शरीअत के हुक्म की खिलाफवर्जी ऐब और गुनाह वाला कर्म है।

खाना और पानी बैठकर खाना और पीना चाहिए

खाने पीने के आदाब में से एक अहम अदब (शिष्टाचार) यह है कि इंसान बैठकर खाए और पिए और जब इंसान खाने के लिए बैठे तो बैठने में विनम्रता का तरीक़ा अपनाए। ऐसे तरीक़ों से परहेज़ करे जो घमंड के तरीक़े हैं। उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

मैं आम इंसान की तरह खाता पीता हूं और (खाने के दौरान) आम इंसान की तरह बैठता हूं। (मुस्नद अबू यअ़ूला ८/३१८, शैख अल्बानी रहिमहुल्लाह ने सहीह ५४४ में इसे सहीह क़रार दिया है।

इस हदीस से मालूम होता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खाने के वक्त विनम्र अंदाज में बैठते थे। आपके खाने का तरीका बयान करते हुए अल्लाह के पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सेवक अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खजूर खाते हुए देखा। आप सुरीन के बदल बैठे हुए थे। इस दौरान आप अपने दोनों पैर खड़े किए हुए थे। (सहीह मुस्लिम ३८०७)

खाने के दौरान बैठने के सिलसिले में एक दूसरे तरीक़े के बारे में अब्दुल्लाह बिन बिस्र रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तोहफे में एक बकरी दी। आप दोनों ज़ानू बैठकर इसे खाने लगे। एक देहाती ने कहा यह बैठने का कौन सा तरीक़ा है? आपने फरमायाः

''अल्लाह तआला ने मुझे प्रतिष्ठित बंदा बनाया है, क्रूर और अत्याचारी नहीं बनाया है। (सुनन अबू दाऊद ३७७३, शैख अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है)

इन हदीसों से मालूम होता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन हदीसों में बयान किए हुए तरीक़ों के मुताबिक बैठकर खाना खाते थे और यह दोनों तरीके शरीफाना और विनम्र हैं।

❑ ❑ ❑

सबको मआफ कर दिया

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''लोगों! हमने तुम्हें मर्द और औरत से पैदा किया, तुम्हारे क़बीले और ख़ानदान बनाए ताकि तुम एक दूसरे से पहचान लिए जाओ, खुदा के नज़दीक ज़्यादा इज़्ज़त का मुस्तहिक़ (पात्र) वह है जो ज़्यादा परहेज़गार है, खुदा दाना (जानने वाला) और बाक़िफकार (खबर रखने) वाला है''। (सूरे हुजुरात-१३)

देखिए ''अन्नासो मिन आदमिन व आदमो मिन तुराब'' इन्सानी समता के पाठ के लिये कुल सात शब्द हैं लेकिन इनमें वह सब कुछ आ गया जो मुसावात (समता) के अध्याय में कहा जा सकता है और समता (मुसावात व बराबरी) की बुनियादी दलील भी पेश कर दी जिससे इख्तेलाफ की जुरअत किसी को नहीं हो सकती यानी जब तमाम इन्सान हज़रत आदम की औलाद हैं तो वह काले हों या गोरे या पीले, पूर्व के हों या पश्चिम के किसी कौम के हों, किसी देश के हों, किसी ख़ित्ते के हों, सब भाई भाई हैं। भाइयों में उसूली तौर पर ऊंच नीच का मतलब क्या? इन्सान की महानता की निर्भरता न रंग पर है, न नस्ल व खानदान पर, न दौलत पर इसकी निर्भरता केवल संयम और अच्छे व्यवहार पर है। इन्सानों के लिये प्रतियोगिता (एक दूसरे से आगे बढ़ने का) मैदान सिर्फ तक़वा और संयम है। हर मामले में आगे बढ़ने की सोच से झगड़ा और हसद जलन पैदा होने का कारण बन सकता है लेकिन तक़वा संयम, नेकी के काम में ऐसी कोई चीज़ आ ही नहीं सकती इस लिये कि वह तक़वा के खिलाफ होगी।

फिर आप (हज़रत मुहम्मद) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुरैश को संबोधित करते हुए पूछा तुम्हारा क्या ख्याल है कि आज मैं तुम से कैसा व्यवहार करने वाला हूं? सबने कहा आप करीम (सज्जन) और अच्छे हैं करीम की औलाद हैं। आपसे केवल खैर और भलाई की उम्मीद है फरमायाः मैं आज वही कहता हूं जो यूसुफ अलैहिस्सलाम ने अपने भाइयों से कहा था आज मेरी तरफ से तुम पर कोई डांट डपट नहीं है जाओ आज तुम सब आज़ाद हो।

संसार के इतिहास के पन्नों को खेंगाल डालिए, इतने अच्छे व्यवहार की कोई मिसाल नहीं मिलेगी यह अफवे आम (साधारण मआफी) उन लोगों के लिये था जो २१ साल तक हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के पैरोकारों के खिलाफ यातना, दुखों और मुसीबतों के वह तूफान बराबर उत्पन्न करते रहे थे जो उनके बस में थें क्या खूब कहा मौलाना आज़ाद ने रसूल अल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में कि ''मज़लूमी में सब्र, मुक़ाबले में संकल्प, मामले में सत्य बोलना और ताक़त व सामर्थ रखने के बाजूद मआफ करना, इंसानियत की तारीख की वह विचित्र खूबियां हैं जो किसी एक जिन्दगी के अन्दर इस तरह कभी जमा नहीं हुईं''

यही आदर्श क़्यामत तक हर इंसान के लिये दुनिया व आखिरत में सफलता व कामयाबी की शाश्वत दस्तावेज़ है। मक्का में इसी मौक़े पर एक वाक़आ पेश आया जो इस आधार पर उल्लेखनीय है कि इससे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दया करूणा उजागर होती है। एक शख्स हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बात करने आया। सामने आया तो उस पर कपकपी तारी हो गई। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह हालत देखी तो फरमायाः कुछ परवाह न करो, मैं बादशाह नहीं, कुरैश की एक गरीब औरत का लड़का हूं। जो सूखा गोश्त खाती थी। (बुखारी बहवाला रहमतुल लिलआलमीन भाग १ पृष्ठ ३४. रसूले रहमत से साभार पृष्ठ ४३६-४४०)

शादी को आसान बनाएं

❑ **असुअद आज़मी**

शादी विवाह इन्सानी ज़रूरत है। अल्लाह ने इस धरती पर इन्सान ही नहीं हर जानदार का जोड़ा बनाया है और दोनों के अन्दर एक दूसरे की तरफ मैलान और आकर्षण रखा है। लेकिन इन्सानी समाज को अश्लीलता और अव्यवस्था से सुरक्षित रखने के लिये मर्द और औरत के मिलाप के लिए शादी की शकल में एक नियम बनाया और नियम को अत्यंत आसान बनाया ताकि इन्सानी ज़रूरत को पूरा करने में हर इन्सान को आसानी हो। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सबसे बेहतर निकाह (शादी) वह है जो सबसे आसान तरीक़े से हो। (सुनन अबू दाऊद, अल्लामा अल्लबानी ने इसे सहीह कहा है)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक मज्लिस में मौजूद एक शख्स किसी औरत से शादी करना चाहता था लेकिन उसके पास इस औरत को महर में देने के लिये कुछ न था, अल्लाह के सन्देशवाहक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उससे कहा कि जाओ तलाश करो, अगर लोहे की अंगूठी भी मिल जाये तो वही ले आओ लेकिन उसके पास यह भी नहीं था। आपने उससे पूछा कि कुरआन की कुछ सूरतें याद हैं? उसने कहा हां, आपने इन ही सूरतों को महर क़रार देकर इस औरत से इसका निकाह कर दिया। (बुखारी-मुस्लिम)

सोचने की बात है कि सहाब-ए-किराम जो अल्लाह के रसूल से बहुत मुहब्बत करते थे और आप की खिदमत का अटूट जजबा रखते थे लेकिन शादी कर ली और अल्लाह के रसूल को ख़बर तक न लगी, अल्लाह के रसूल को भी मालूम हुआ तो आपने कोई शिकायत नहीं की और न ही किसी तरह की नागवारी का इज़हार किया।

इन सब वाकआत से पता चलता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में शादी विवाह के समारोह और फंकशन कितनी सादगी, और आसान तरीक़े से होते थे। इसके विपरीत आज शादी को रस्मो रिवाज, खुराफात के बन्धनों में इतना जकड़ दिया गया है और लड़की की शादी को इतना कठिन बना दिया गया है कि आम आदमी जिसके पास कई औलाद हों उनकी शादी के मामले को लेकर चिंतित रहता है दुनिया भर की रस्मों व रिवाज और ताम झाम पर होने वाले खर्च के बारे में सोच सोच कर वह परेशान रहता है कि वह इतना कैसे मैनेज कर पायेगा।

आज शादी और उससे संबन्धित समारोह और रस्मो रिवाज का असीमित सिलसिला हर संजीदा व्यक्ति के लिये चिंता का कारण बना हुआ है। मंगनी की रस्म, जहेज़, बारात, पगड़ी बंधाई, रत जगा, मुंह दिखाई, मंहगे दावत नामे, मंहगे शादी हाल या होटल, उनका डेकोरेशन, लाइटिंग, तरह तरह के खाने और डिश, वीडियो ग्राफी जैसी दर्जनों रस्मों को पूरा करने के लिये आदमी पानी की तरह पैसे बहाता है। आर्थिक एतबार से कमजोर होने के बावजूद आनावश्यक कामों को अंजाम देना ज़रूरी समझता है ताकि लोग उसे किसी से कम न समझें समाज में उसकी नाक ऊंची रहे इसके लिये

कभी कभार अपनी जायदाद बेच देता है या उसे गिरवी रख देता है, कितने लोग बैंकों से सूदी कर्ज लेते हैं लेकिन खर्च में और रस्मो रिवाज को पूरा करने में किसी तरह की कमी लाने के बारे में नहीं सोचते।

फुजूल खर्ची बहुत बड़ी लानत है जो समाज घुन की तरह चाट डालती है इसी लिये इस्लाम ने इस बारे में सख्त मोकिफ अपनाया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

"फुजूल खर्ची मत करो, इसलिये कि फुजूल खर्ची करने वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ना शुकरा है"। (सूरे इसरा-२६-२७)

क़्यामत के दिन जिन सवालों का जवाब दिये बगैर बन्दे को छुटकारा नहीं, उनमें से एक सवाल यह भी होगा कि माल कहां से कमाया और किन चीज़ों में इसे खर्च किया। (सुनन तिर्मिज़ी-सहीह)

गौर करने की बात यह है कि जिस समाज में असंख्य लोग ऐसे हों जिन्हें दो वक़्त की रोटी नहीं प्राप्त है उनको और उनके बाल बच्चों को तन ढाकने के लिये कपड़े नहीं, गरीबी की वजह से शैक्षणिक फीस और दूसरे खर्च सहन नहीं कर सकते, एलाज के लिये दर दर की ठोकरें खाते हैं, कितने यतीम, बेवा और बेसहारा हैं जिन्हें सर छिपाने के लिये झोंपडी भी नहीं है, कितनी समाजी, शैक्षणिक और कल्याणकारी संस्थाएं हैं जो पूंजी न होने के कारण बन्द होने को हैं। ऐसे हालात में एक शादी पर पानी की तरह पैसा बहाया जाये महज़ दिखावे, बनावटी शान व शौकत और अपनी हैसियत की संतुष्टि के लिये लाखों रूपये खर्च कर दिये जाएं, क्या शरई, अकली और समाजी किसी एतबार से इसे दुरूस्त कहा जा सकता है? हमारा यह कर्म अल्लाह के क्रोध को आमंत्रित करेगा या उसकी रहमत को? शादी के अवसर पर रिश्तेदारों और अपने करीबी लोगों को मनाने और राज़ी करने में हम लगे रहें लेकिन अपने कर्मों से अल्लाह को नाराज़ कर देना कहां की बुद्धिमानी है?

इस समाजी बीमारी का एलाज बहुत ज़रूरी है वर्ना यह खतरनाक शक्ल धारण कर लेगी इस बारे में व्यक्तगत और सामूहिक दोनों तरह तरह की कोशिश होनी चाहिए।

व्यक्तगत कोशिश में सबसे पहली बात यह है कि हर शख्स जिसके यहां शादी होने वाली हो वह फ़ुज़ूल रसमो रिवाज के बजाए केवल अहम कामों को करें। दावत नामा सस्ता हो, जगह और होटल कम खर्च वाला हो, वलीमा में एक पकवान पर संतोष करे, दिखावा न करे, नौजवान अपनी शादी के अवसर पर इन बातों का ख्याल रखें। सारांश यह है कि शादी को सादा बनायें।

सामूहिक कोशिश की एक अहम कड़ी यह है कि शहरों और महल्लों में समाज सुधारक कमेटी बनाएं इन कमेटियों की तरफ से जागरूकता अभियान चलाया जाए, अवामी प्रोग्राम आयोजित किये जाएं जिन लोगों के यहां शादी होने वाली हो उनसे मिल कर सुधार की अपील की जाए, बुकलेट, हैंडबिल प्रकाशित किए जाएं। सोशल मीडिया का भी इस्तेमाल किया जाए। ओलमा, खतीब हज़रात और निकाह पढ़ाने वाले हज़रात भी अपनी भूमिका निभाएं। महिलाओं में भी जागरूकता अभियान चलाया जाए। स्पष्ट रहे कि बाज़ जगहों पर इस प्रकार की कमेटियां हैं और तत्परता से काम कर रही हैं उन्हें इस सिलसिले में काफी कामयाबी मिल रही है अतः समाज के प्रभावी लोगों को आगे आना चाहिये। अल्लाह हम सबको इन सब बुराइयों से बचने की क्षमता दे।

इब्ने अहमद नक़वी के निधन पर महत्वपूर्ण हस्तियों का शोक सन्देश

(१)

आदरणी अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

अस्सलामो अलैकुम

अर्ज़ है कि सम्माननीय अतहर नक़वी की वफात की खबर से हार्दिक दुख हुआ। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम अगर्चे प्राकृतिक आयु तक पहुंच गये थे फिर भी उनका दम जमाअत के लिये विशेष रूप से गनीमत था।

जो बादा खुवार पुराने थे उठते जाते हैं,

कहीं से आबे बकाये दवाम ले साक़ी

नक़वी साहब एक पूरे काल का चित्र और आधुनिक पीढ़ी के नब्बाज़ और मार्गदर्शक थे। अपने लेखों के द्वारा जमाअत व समुदाय का बरवक्त मार्गदर्शन का फरीजा जीवन भर अंजाम देते रहे। वह एक सम्माननीय परिवार के सपूत थे, हम सबके सबसे बुजुर्ग और निःस्वार्थ और शुभचिंतक थे। अल्लाह से दुआ है कि मरहूम को अपनी रहमतों की क्षाँव में रखे, उनकी सेवाओं को कुबूल फरमाये, उनकी कोताहियों को मआफ करे और जन्नतुल फिरदौस में ऊंचा मकम अता फरमाये और सभी संबन्धितों और सभी पसमांदगान को सबरे जमील दे।

(शोक कर्ताः महफूजुर्रहमान फैज़ी मऊनाथ भंजन ८ मार्च २०२४)

(२)

सम्माननीय श्री असगर अली इमाम महदी सलफी, अध्यक्ष मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

आप के द्वारा जारी अखबारी बयान के अनुसार हम सभी के वरिष्ठ इस्लामी स्कालर, विश्वसनीय पत्रकार, कवि एवं साहित्यकार और मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के आर्गन जरीदा तर्जुमान के संपादक श्री मौलाना अब्दुल कुद्दूस अतहर नक़वी का निधन हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

मौत उसकी है करे जिस पर ज़माना अफसोस

यूं तो दुनिया में सभी आये हैं मरने के लिये

उनकी मौत ज्ञान व शोध, और मानवता का एक अक्षतीय खसारा है। उन्होंने एक भरपूर ज्ञानात्मक, दावती और पत्रकारिता की एक मिसाली जिन्दगी गुज़ारी। ज्ञानात्मक रूप से इतने परिपक्व थे कि जब कलम उठाते तो इसका हक़ अदा कर देते और जब जुबान खोलते तो पूरी सभा उनको खामूशी से सुनती थी। किसी भी जटिल मसले में उनकी राय स्वीकार्य होती थी। आप के ज्ञान, विनम्रता, सादगी और निःस्वार्थता की वजह से तमाम लोगों की निगाह में आप का बड़ा सम्मान था। इतनी गैरत और खुददारी थी कि फकीराना ज़िन्दगी गुज़ार दी। वह पूर्वजों का एक जीता जागता आदर्श थे। उन्होंने अपने असीमित ज्ञान को शोहरत और पद हासिल करने का माध्यम नहीं बनाया।

गर्द शोहरत को भी दामन से लिपटने न दिया, कोई एहसान जमाने का उठाया ही नहीं

अल्लाह उनके साथ रहमत का मामला फरमाये, जमाअत को उनका अच्छा विकल्प अता फरमाये और पसमांदगान को सबरे जमील की क्षमता दे।

(मुहम्मद अली सलफी उप सचिव मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अध्यक्ष सूबाई जमीअत अहले हदीस बिहार-१०/६/२४)

❑ ❑ ❑

गाँव महल्ला में सुबह शाम पढ़ाने के लिये मकातिब क़ाइम कीजिए मकातिब में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का आयोजन कीजिये

हज़रात! पवित्र क़ुरआन इन्सानों और जिन्नों के नाम अल्लाह का अंतिम सन्देश है जो आखिरी नबी पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ जो मार्गदर्शन का स्रोत, इबरत व उपदेश का माध्यम, दीन व शरीअत और तौहीद व रिसालत का प्रथम स्रोत है जिस का अक्षर-अक्षर ज्ञान और हिक्मत व उपदेश के मोतियों से परिपूर्ण है जिस का सीखना सिखाना, और तिलावत सवाब का काम और जिस पर अमल सफलता और दुनिया व आखिरत में कामयाबी का सबब और ज़मानत है और कौमों की इज़्ज़त व जिल्लत और उत्थान एवं पतन इसी से सशर्त है। यही वजह है कि मुसलमानों ने शुरूआत से ही इसकी तिलावत व क़िरत और इस पर अमल का विशेष एहतमाम किया। हिफ्ज व तजवीद और कुरआन की तफसीर के मकातिब व मदारिस काइम किए और समाज में इस की तालीम व पैरवी को विशेष रूप से रिवाज दिया जिस का परिणाम यह है कि वह कुरआन की बरकत से हर मैदान में ऊंचाइयों तक पहुंचे लेकिन बाद के दौर में यह उज्जवल रिवायत दिन बदिन कमजोर पड़ती गई स्वयं उप महाद्वीप में कुरआन की तालीम व तफसीर तो दूर की बात तजवीद व किरात का अर्से तक पूर्ण और मजबूत प्रबन्ध न हो सका और न इस पर विशेष ध्यान दिया गया जबकि कुरआन सीखने, सिखाने, कुरआन की तफसीर और उसमें गौर व फिक्र के साथ साथ तजवीद भी एक अहम उददेश था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की बड़ी ताकीद भी फरमाई थी।

शुक्र का मकाम है कि चन्द दशकों पहले मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द सहित विभिन्न पहलुओं से शिक्षा जागरूकता अभियान के परिणाम स्वरूप, मदर्सों, जामिआत, और मकातिब व मसाजिद में पवित्र कुरआन की तजवीद का मुबारक सिलसिला शुरू हुआ था जिस के देश व्यापी स्तर पर अच्छे परिणाम सामने आए। पूरे देश में मकातिब बड़े स्तर पर स्थापित हुए और बहुत सी बस्तियों में मकतब की तालीम के प्रभाव से बच्चों का मानसिक रूप से विकास होने लगा लेकिन रोज़ बरोज़ बदलते हालात के दृष्टिगत आधुनिक पाठशालाओं, कन्वेन्ट्स और गांव में मदारिस की वजह से मकातिब बहुत प्रभावित हुए इस लिये मकातिब को बड़े और अच्छे स्तर पर विकसित करने की ज़रूरत है ताकि नई पीढ़ी को दीन की बुनियादी बातों और पवित्र कुरआन से अवगत कराया जा सके।

इसलिये आप हज़रात से दर्दमन्दाना अपील है कि इस संबन्धा में विशेष ध्यान दें और अपने गांव महल्लों में सुबह व शाम पढ़ाने के लिये मकातिब की स्थापना को सुनिश्चित बनाएं। अगर काइम है तो उनकी सक्रियता में बेहतरी लाएं, प्राचीन व्यवस्था को अपडेट करें, इन में तजवीद और कुरआन की शिक्षा का विशेष आयोजन करें ताकि जमाअत व मिल्लत की नई पीढ़ी को दीन व चरित्र से सुसज्जित करें और उन्हें दीन व अकीदे पर काइम रख सकें।

अल्लाह तआला हम सब को एक होकर दीन जमाअत व जमीअत और मुल्क व मिल्लत की निस्वार्थता सेवा करने की क्षमता दे, हर तरह के फितने और आजमाइश से सुरक्षित रखे और वैश्विक महामारी कोरोना से सबकी रक्षा करे। आमीन

अपील कर्ता

असगर अली इमाम महदी सलफी

अमीर, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द एवं अन्य जिम्मेदारान

Posted On 24-25 Every Month
Posted At LPC, Delhi
RMS Delhi-110006
"Registered with the Registrar of Newspapers for India"

JUNE 2024
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस मंज़िल की तामीर व तकमील के सिलसिले में

सम्माननीय अइम्मा, खुतबा, मस्जिदों के संरक्षकों और जमईआत के पदधारियों से पुरजोर अपील व अनुरोध

अहले हदीस मंज़िल में चौथी मंज़िल की ढलाई का काम हुआ चाहता है और अन्य तीनों मंज़िलों की सफाई की तकमील के लिये आप से अनुरोध है कि आने वाले जुमा में नियमित रूप से अपनी मस्जिदों में इसके सहयोग के लिये पुरज़ोर एलान फरमायें और नीचे दिये गये खाते में रकम भेज कर जन्नत में ऊंचा मक़ाम बनाएं और इस सद-क़-ए जारिया में शरीक हों।

सहयोग के तरीक़े (१) सीमेन्ट सरिया, रोड़ी, बदरपुर, रेत (२) नक़द रक़म (३) कारीगरों और मज़दूरों की मज़दूरी की अदायगी (४) खिड़की, दरवाज़ा, पेन्ट, रंग व रोगन का सामान या क़ीमत देकर सहयोग करें और माल व औलाद और नेक कार्यों में बर्कत पाएँ।

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. **629201058685** (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)

पताः-4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

Total Pages 28

28